वांगारी मथाई

बदलाव के बीज

शांति के लिए वृक्षारोपण

वांगारी मथाई

बदलाव के बीज

शांति के लिए वृक्षारोपण

लेखक : जेन जॉनसन

चित्रण : सोनिया लिन

हिंदी : दीपक थानवी

"आओ," वांगारी की मां ने बुलाया। उसने अपनी जवान बेटी को एक चौड़े, चिकने तने और हरे अंडाकार पत्तों वाले ऊंचे पेड़ की ओर इशारा करते हुए बुलाया।

"इसे महसूस करो," उसकी माँ फुसफुसाई ।
वांगारी ने अपने छोटे हाथों को पेड़ के तने पर फैला दिया। उसने अपनी उँगलियों को खुरदुरी छाल पर रगड़ा और इससे उसके हाथ चिकने हो गए।
"यह मुगुमो है," उसकी मां ने कहा। "यह कई लोगों का घर है। यह बहुतों को पालता भी है। "
उसने एक जंगली अंजीर को मुगुमो के निचले तने से तोड़ लिया, और उसे अपनी बेटी को दे दिया। छिपकलियों और हाथियों की तरह वांगारी को भी ऐसा स्वादिष्ट फल खाने को मिला। पेड़ के ऊपर वाले तनों में चिड़ियां अपने घोसलों में बैठी चहचहा रही थी। पेड़ की शाखाएं बंदरों की उछलकूद से हिल रही थी।
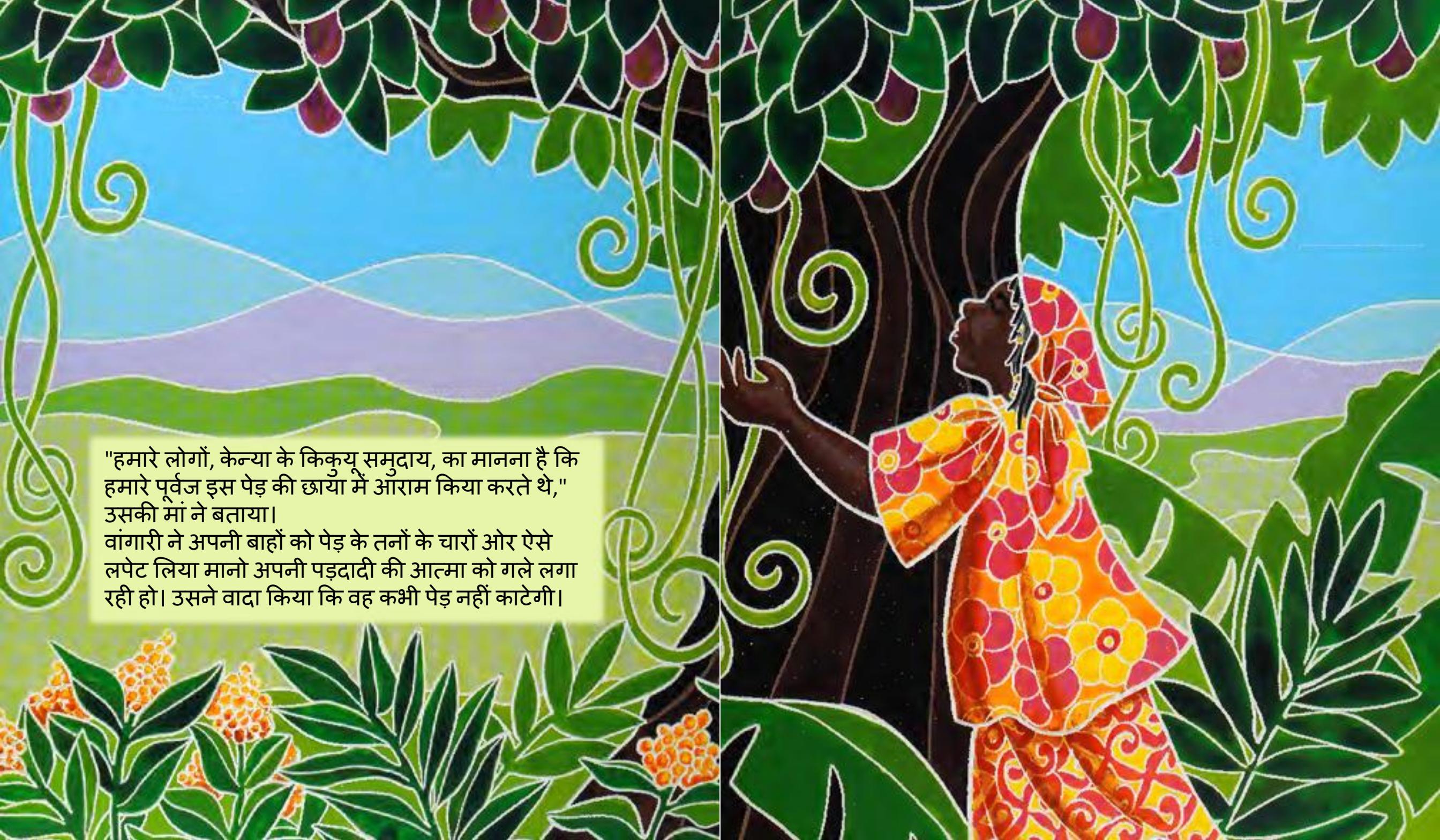
"हमारे लोगों, केन्या के किकुयू समुदाय, का मानना है कि
हमारे पूर्वज इस पेड़ की छाया में आराम किया करते थे,"
उसकी मां ने बताया।
वांगारी ने अपनी बाहों को पेड़ के तनों के चारों ओर ऐसे
लपेट लिया मानो अपनी पड़दादी की आत्मा को गले लगा
रही हो। उसने वादा किया कि वह कभी पेड़ नहीं काटेगी।

हर साल मुगुमो बढ़ता गया, और इसी तरह वांगारी भी। अपने परिवार की सबसे बड़ी लड़की के रूप में, उसके पास कई घर के काम होते थे। हर दिन वह नदी से साफ और मीठा पानी लाती थी। बारिश के मौसम में उसने शकरकंद, बाजरा, और फलियों के बीज लगाए। जब सूखे मौसम में सूरज की धूप तेज़ थी, तो उसने मुर्गियों को पेड़ की छाया में सुलाया।

कभी-कभी जब उसका भाई दिरेतु स्कूल से लौटता था, तो वह और वांगारी नदी के किनारे अरारोट के पौधों के बीच खेलते थे, जहाँ हजारों अंडे टैडपोल में बदल जाते थे और वही टैडपोेल मेंढक बन जाते थे। उस समय के दौरान, दिरेतु ने वांगारी को बताया कि उसने अपनी कक्षाओं में क्या सीखा था। "पौधे लोगों को सांस लेने के लिए हवा देते हैं," उसने कहा। "दो से विभाजित होने पर बीस से दस हासिल होता है। दुनिया में सात महान समुद्र हैं। "

वांगारी एक पेड़ की भांति शांति से सुन रही थी, लेकिन उसका जिज्ञासु मन ऐसे बह रहा था जैसे नदी के बहाव में कोई नाव। हालाँकि वह कुछ किकुयू लड़कियों को जानती थी, जो पढ़ सकती थीं, वांगारी ने अपने भाई की तरह ही स्कूल जाने और सीखने का सपना देखा।

"मुझे स्कूल जाना चाहिए," उसने अपने भाई से कहा।

"तुम जरूर जाओगी," भाई ने वादा किया।

दिरेतु ने अपने माता-पिता से बात की। "वांगारी स्कूल क्यों नहीं जाती?" उसने पूछा।
वांगारी के माता-पिता को पता था कि वांगारी बहुत मेहनती और होशियार है। हालाँकि एक लड़की का शिक्षित होना असामान्य था, उन्होंने उसे स्कूल भेजने का फैसला किया। उन्हें पता था कि वह उन्हें निराश नहीं करेगी। फीस और आपूर्ति की व्यवस्था करने के बाद, वांगारी की मां उसके पास आई। "तुम स्कूल जा रही हो," उसने अपनी बेटी से कहा।
वांगारी खुलकर मुस्कुरायी और अपनी मां को गले लगाया। "धन्यवाद!" वह रोती हुई बोली। "तुम्हें मुझपर गर्व होगा।"

वांगारी ने मिट्टी से बनी दीवारों, गंदगी से भरे फर्श और टिन की छत के बने एक कमरे वाले स्कूलहाउस तक लंबी सड़क की सैर की। समय के साथ-साथ उसने अपने अक्षरों की प्रतिलिपि बनाना और संख्याओं को पहचानना सीख लिया। वांगारी के अक्षरों ने जल्द ही शब्द बना दिए और फिर शब्दों ने वाक्य भी बना दिए। उसने सीखा कि संख्याओं को कैसे जोड़ा और घटाया, गुणा और भाग किया जा सकता है। उसने पाया कि जानवर और पौधे कई मायनों में इंसानों की तरह थे। उन्हें हवा, पानी और पोषण की भी जरूरत थी।

जब वांगारी ने प्राथमिक विद्यालय समाप्त किया, तब वह ग्यारह वर्ष की थी। उसका दिमाग समृद्ध मिट्टी में निहित बीज की तरह था, जो बढ़ने के लिए तैयार था। वांगारी अपनी शिक्षा जारी रखना चाहती थी, लेकिन ऐसा करने के लिए उसे अपना गाँव छोड़कर राजधानी नैरोबी जाना होगा। वांगारी कभी भी अपनी घाटी की चोटियों से दूर नहीं गई थी। वह डर गयी थी।

"जाओ," उसकी मां ने कहा। उसने मुट्ठी भर मिट्टी उठाई और धीरे से अपनी बेटी के हाथ में रख दी। "तुम जहां भी जाओगी, हम तुम्हारे साथ होंगे।"

वांगारी को जाने का दुख था, लेकिन वह जानती थी कि उसकी मां ने जो कहा था वह सच था। वांगारी जहां भी गई, उसका परिवार, उसका गांव और उसका किकुयू समुदाय उसके साथ चलता रहा। उसने अपने परिवार वालों को गले लगाया और मुगुमो पेड़ को अलविदा कहा, यह याद रखते हुए कि उसे पेड़ की रक्षा करनी है ।
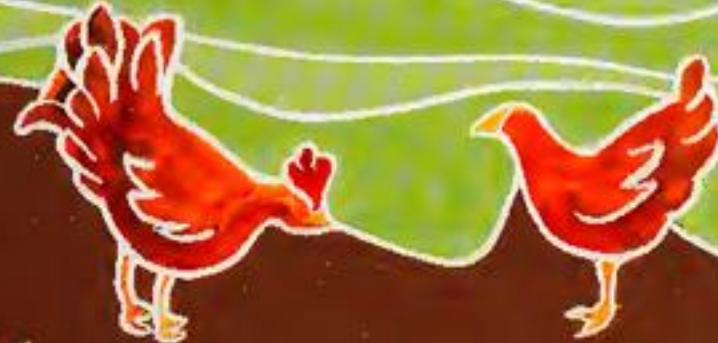
शहर के जीवन ने वांगारी को चौंका दिया। गगनचुंबी इमारतें उसके सिर के ऊपर थी, पेड़ नहीं। लोग सड़कों पर ऐसी हड़बड़ी में चल रहे थे जैसे पत्थरों पर नदी बहती थी। स्कूल में वह अपने जैसी अन्य लड़कियों के साथ रहती थी, सभी अपने गाँव के रीति-रिवाजों को नए शहर के साथ बुनने की कोशिश कर रही थीं। रात में जब लड़कियां सोती थीं, वांगारी घर और मुगुमो पेड़ के मीठे अंजीरों का सपना देखती। उसके सपनों ने उसे सभी जीवित चीजों का आदर करने की अपनी किकुयू परंपरा का सम्मान करना याद दिलाया।

वांगारी एक उत्कृष्ट छात्रा थी, और विज्ञान उसका पसंदीदा विषय बन गया था। वह विशेष रूप से जीवित चीजों का अध्ययन करना पसंद करती थी। वायु, उसने सीखा, ऑक्सीजन के दो अणुओं से एक साथ बंधने से बनी थी। शरीर कोशिकाओं से बने होते थे। प्रकाश संश्लेषण के कारण पत्तियों का रंग बदलता था।
स्नातक होने के बाद, वांगारी ने अपने दोस्तों को बताया कि वह एक जीव-वैज्ञानिक बनना चाहती है।
"कई देशी महिलाएं वैज्ञानिक नहीं बनती हैं," दोस्तों ने उसे कहा।
"मैं बनूंगी," उसने कहा।
वांगारी को जीव विज्ञान का अध्ययन करने के लिए दुनिया भर में आधी यात्रा करनी होगी। उसने केन्या कभी नहीं छोड़ा था और उसके पास बहुत कम पैसे थे। लेकिन अपने शिक्षकों की मदद से, उसे कंसास के एक कॉलेज में छात्रवृत्ति मिल गयी।
अमेरिका, केन्या से बहुत अलग था। कॉलेज में, वांगारी के कई विज्ञान प्राध्यापक महिलाएं थीं। उनसे उसे पता चला कि एक महिला कुछ भी कर सकती थी, जो वह चाहती थी, भले ही वह पहले नहीं कर पाई हो। जबकि वांगारी ने पाया कि अणु एक माइक्रोस्कोप लेंस के नीचे कैसे चलते हैं और कोशिकाएं पेट्री डिश में कैसे विभाजित होती हैं। उसने एक महिला वैज्ञानिक के रूप में भी अपनी ताकत पाई।

कॉलेज से स्नातक होने के बाद, वांगारी ने अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए पेंसिल्वेनिया की यात्रा की। घर से आये पत्रों ने वांगारी को केन्या में आये बदलावों के बारे में बताया। लोगों ने जोमो केन्याटा को किकुयू का अध्यक्ष चुना था। अपने देश पर गर्व करते हुए और किकुयू पर गर्व करते हुए, वांगारी ने अपने लोगों की मदद करने के लिए केन्या लौटने का फैसला किया।

अमेरिका ने वांगारी को बदल दिया था। उसने संभावना और स्वतंत्रता की भावना की खोज की थी जिसे वह केन्याई महिलाओं के साथ साझा करना चाहती थी। उसने नैरोबी विश्वविद्यालय में शिक्षक की नौकरी स्वीकार की।

कई महिलाएं तब प्राध्यापक नहीं थीं, और बहुत कम विज्ञान पढ़ाती थीं। वांगारी ने अन्य महिलाओं और लड़कियों के लिए रास्ता बनाया। उसने समान अधिकारों के लिए काम किया ताकि महिला वैज्ञानिकों को पुरुष वैज्ञानिकों के बराबर सम्मान दिया जाए।
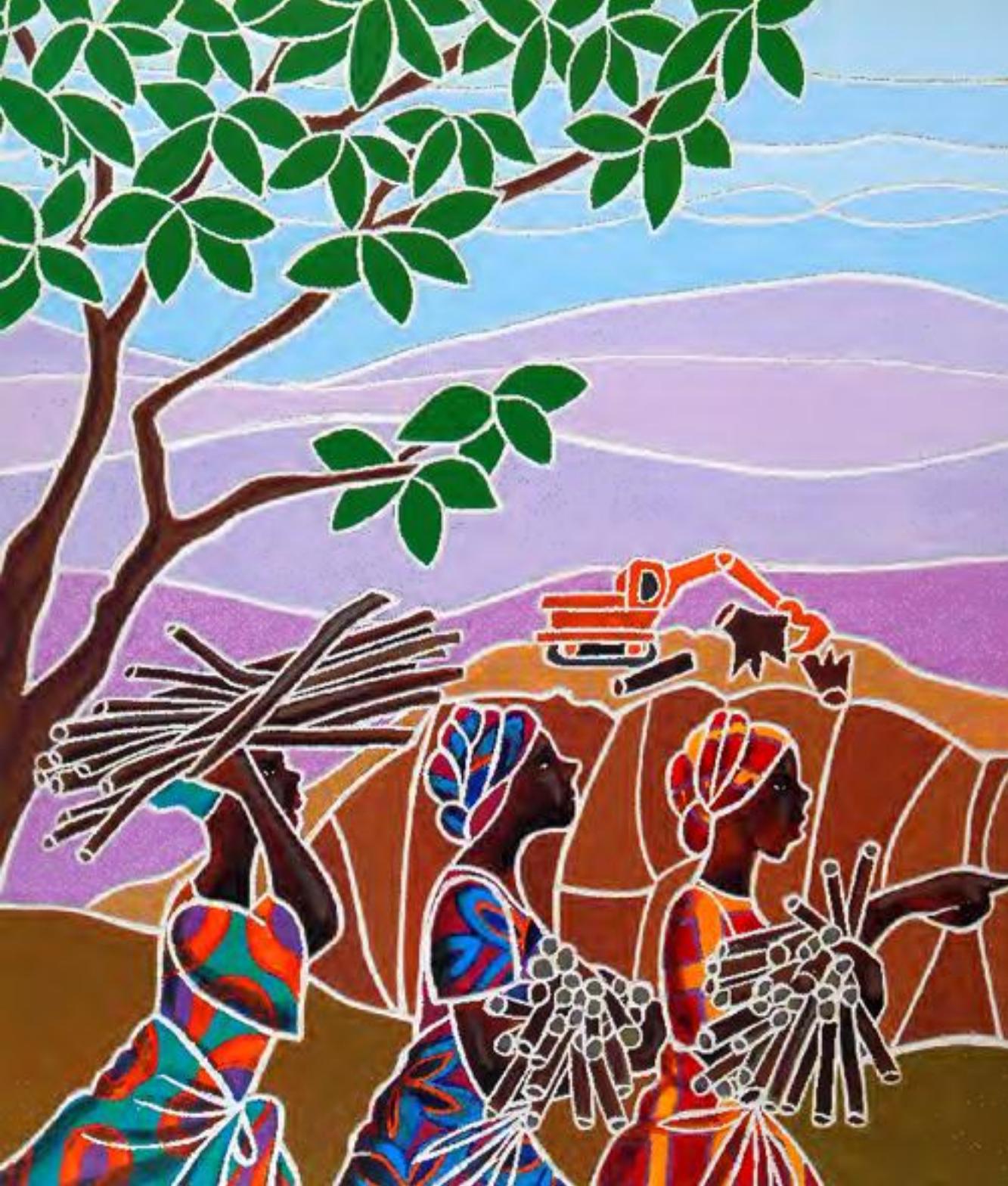
वांगारी ने दुख के साथ देखा कि उनकी सरकार ने बड़ी-बड़ी विदेशी कंपनियों को ज्यादा से ज्यादा जमीन बेची, जो लकड़ी के लिए जंगलों को काटती हैं और कॉफी बागानों के लिए जमीन खाली करती हैं। देवदार और बबूल जैसे मूल वृक्ष लुप्त हो गए। पेड़ों के बिना, पक्षियों के घोंसले के लिए कोई जगह नहीं थी। बंदरों ने अपने झूलों को खो दिया। थकी हुई माताएं जलाऊ लकड़ी के लिए मीलों पैदल चलती।

जब वांगारी अपने गाँव गई तो उसने देखा कि मुगुमो पेड़ों को न काटने का किकुयू रिवाज खो गया है। अब पेड़ की जड़ों के पास जगह नहीं है, मिट्टी नदियों में प्रवाहित होती है। जो पानी मक्का, केले और शकरकंद को उगाने के लिए इस्तेमाल किया जाता था, वह अब मिट्टी में बदल गया और सूख गया। कई परिवार भूखे रह गए।

वांगारी भूमि के नष्ट होने के बारे में सोच भी नहीं सकती थी। अब शादीशुदा और तीन बच्चों की मां, वह इस बात को लेकर चिंतित थी कि उन सभी माताओं और बच्चों का क्या होगा जो जमीन पर निर्भर थे।
वांगारी ने कहा, "हमें कुछ करना चाहिए।"
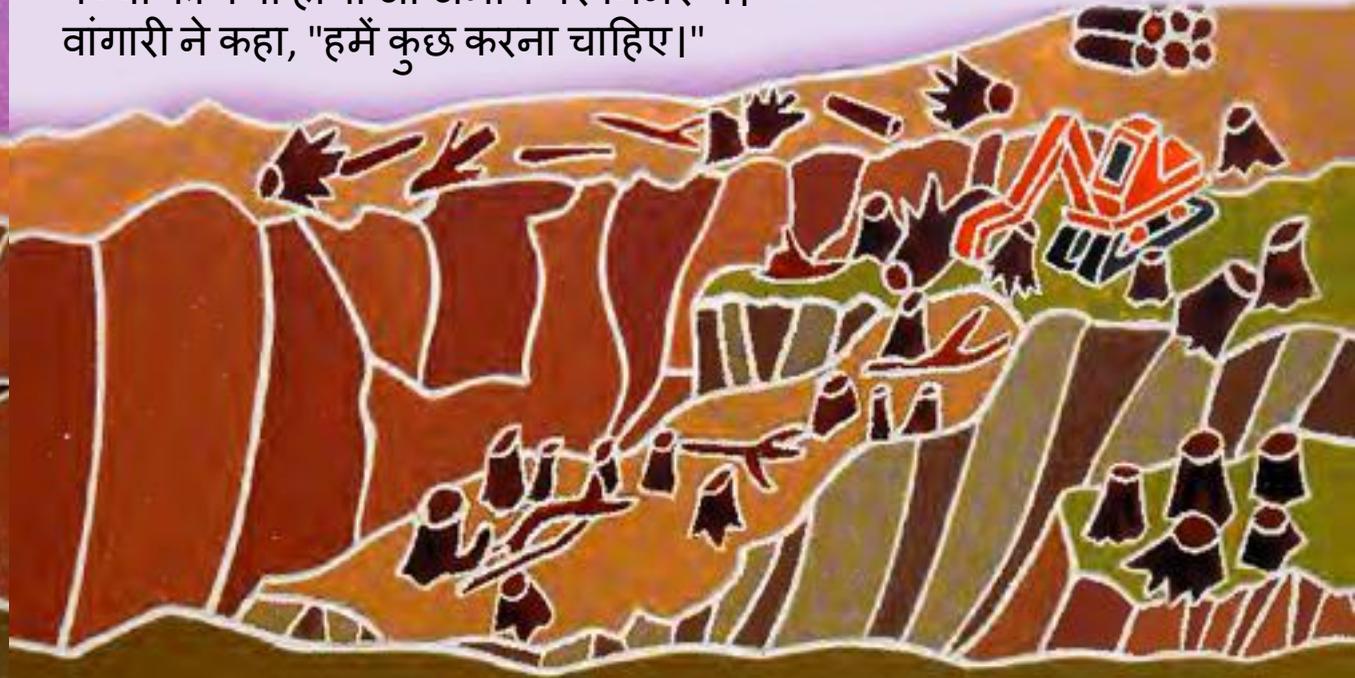
वांगारी के पास बीज के रूप में छोटा लेकिन आकाश तक पहुंचाने वाले एक पेड़ जितना लंबा एक विचार था। "आओ! चलो साथ मिलकर काम करें!" उसने अपनी तरह अपने समुदाय की माताओं-महिलाओं से कहा। वांगारी ने मिट्टी में गहरी खुदाई की और उसमें अंकुरित पौधा लगाया। "हमें पेड़ लगाने चाहिए।"
कई महिलाओं ने सुना। कईयों ने पौधे रोपे । वहां खड़े कुछ आदमियों ने हंसी-मजाक किया। उन्होंने कहा कि पेड़ लगाना महिलाओं का काम था। दूसरों ने शिकायत की कि वांगारी बहुत अधिक मुखर थी - एक महिला के लिए बहुत सारी राय और बहुत अधिक शिक्षा के साथ।
वांगारी ने उसकी आलोचना करने वालों की बात सुनने से इनकार कर दिया।
इसके बजाय उसने उनसे कहा, "वे पेड़ आप आज काट रहे हैं जो आप द्वारा नहीं लगाए गए थे बल्कि उन लोगों द्वारा जो पहले आए थे। आपको ऐसे पेड़ लगाने होंगे। जैसे सूरज, अच्छी मिट्टी और भरपूर बारिश से अंकुरित पौधे को लाभ होता है , वैसे ही आपके पेड़ लगाने से समुदाय के आने वाले भविष्य को लाभ पहुंचेगा । हमारे भविष्य की जड़ें उस अंकुरित पौधे में होगीं और उससे बने पेड़ों की छायां से हम आशाओं के आसमान तक पहुंचेगे।"
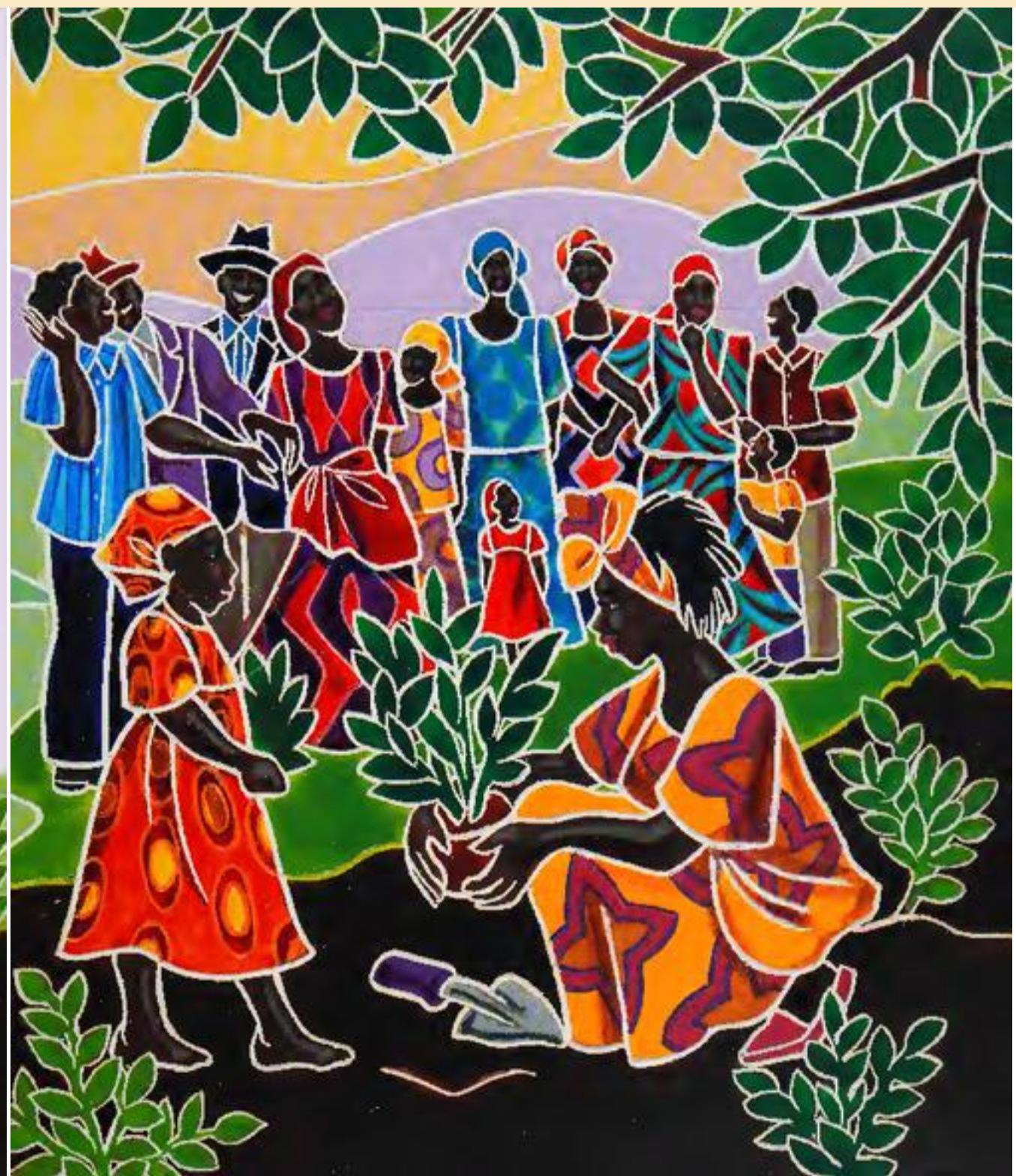
वांगारी ने पौधों, बीजों और फावड़ों को साथ लेकर गाँवों, कस्बों और शहरों की यात्रा की । वह जहां भी गयी , वहां पर महिलाओं ने पेड़ों की पंक्तियाँ लगाई जो पूरे देश में हरे रंग के बेल्ट की तरह दिखती थी। इस वजह से वे खुद को ग्रीन बेल्ट मूवमेंट कहने लगे।

"हम बड़ी दुनिया को नहीं बदल सकते हैं लेकिन हम जंगल की तस्वीर को बदल सकते हैं," वांगारी ने कहा।

एक पेड़ दस पेड़ों में बदला, दस से एक सौ, एक सौ से दस लाख, सभी तरह से तीन करोड़ तक पेड़ लगाए गए। केन्या फिर हरा हो गया। पक्षियों ने नए पेड़ों में घोंसला बनाया। बंदर शाखाओं पर झूलने लग गए। नदियां स्वच्छ जल से भर गईं। मुगुमो पेड़ की शाखाओं में बहुत सारे जंगली अंजीर आ गए।
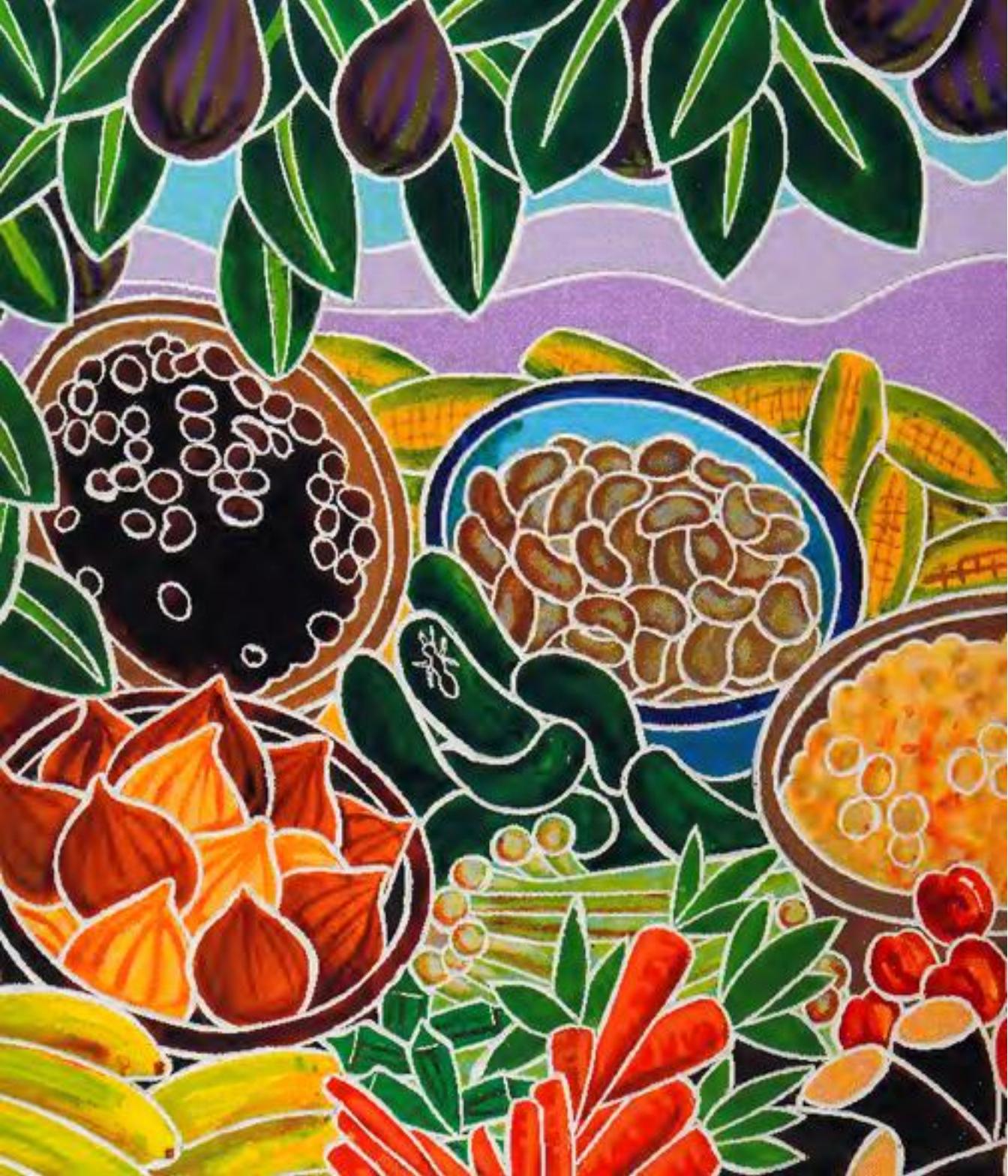
माताओं ने अपने बच्चों को मक्का, केला और
शकरकंद खिलाया, जब तक कि उनका पेट
नहीं भर गया।
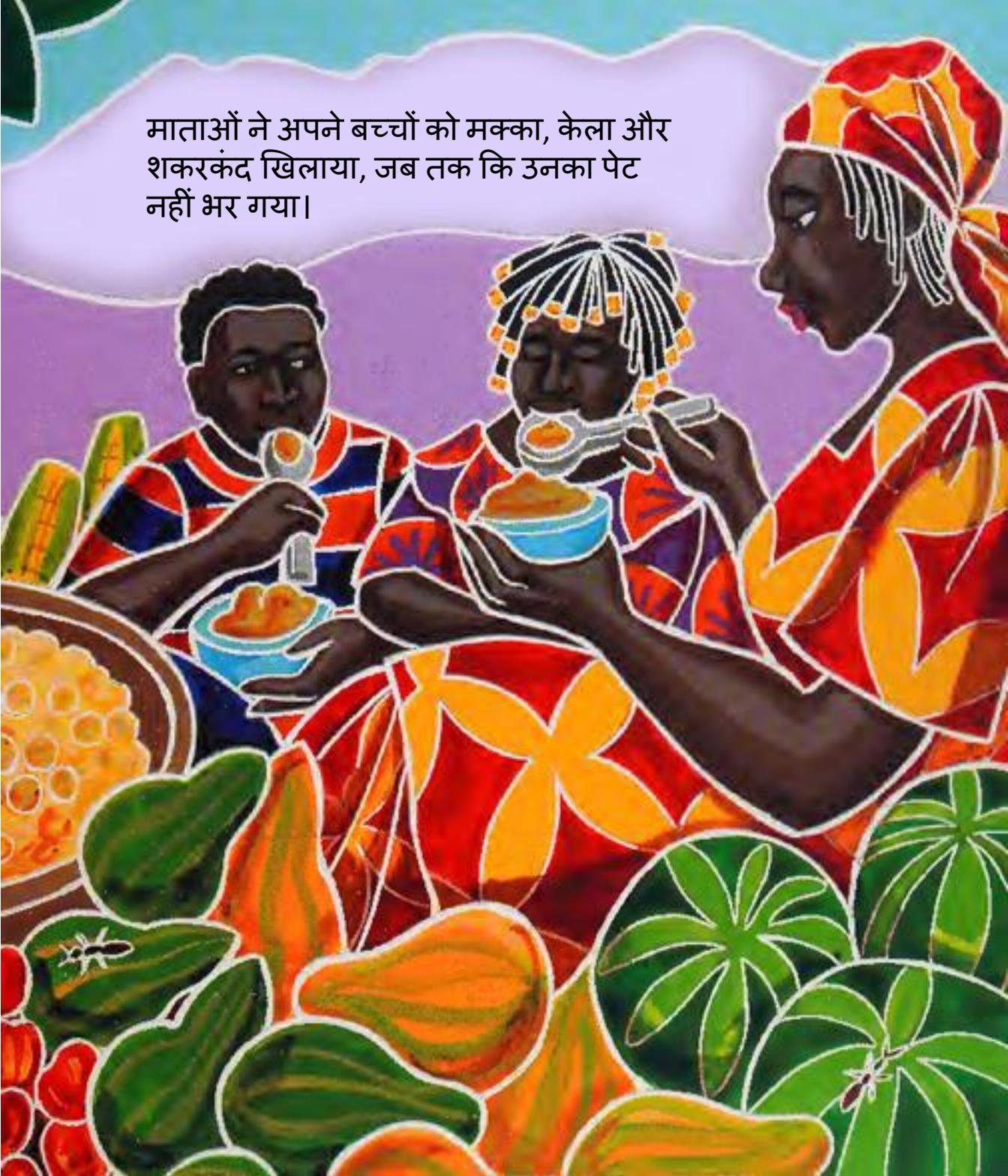
जैसे ही ग्रीन बेल्ट आंदोलन वाली महिलाएं केन्या भर में आगे बढ़ीं, वांगारी के आंदोलन के खिलाफ शक्तिशाली आवाजें उठने लगीं। अपने कॉफी बागानों के लिए अधिक भूमि और लकड़ी के लिए अधिक पेड़ों की मांग करने वाले लालची विदेशी व्यवसायिओं ने पूछा, "यह महिला कौन है जो एक अंकुरित पौधे के साथ इतने सारे लोगों के जीवन को बदल सकती है? हमें अपनी जमीन और पेड़ों के लिए मुनाफा क्यों देना चाहिए? "

उन्होंने वांगारी को रोकने के लिए एक योजना बनाई।

एक दिन जब वह एक पेड़ लगा रही थी, कुछ धनी व्यापारियों ने वांगारी को गिरफ्तार करने के लिए भ्रष्ट पुलिस अधिकारियों को भुगतान किया।

अपने जेल की कोठरी में, वांगारी ने प्रार्थना की। और एक शक्तिशाली हवा के खिलाफ एक मजबूत पेड़ की तरह, उसके विश्वास ने उसे मजबूत रखा। उसने हार मानने के बजाय दूसरी महिला कैदियों से दोस्ती कर ली। उन्होंने उसे अपनी कहानियां सुनाई। उसने उन सभी को अपने ग्रीन बेल्ट आंदोलन के बारे में बताया।इस तरह वे सब एक दूसरे की मदद करने लगे।
वांगारी केन्या और अन्य देशों के कई लोगों को जानती था। वे सब लोग उसकी रिहाई के लिए प्रदर्शन करने लगे। इससे पहले कि उसे मुक्त किया जाता, वांगारी ने अन्य महिला कैदियों के अधिकारों के लिए लड़ने में मदद करने का वादा किया।

वांगारी ने महसूस किया कि जिन लोगों ने उसे जेल में डाला था, उन्हें जमीन में बदलाव या महिलाओं में बदलाव पसंद नहीं था। बड़ी कंपनियों के प्रभारी लोग अपने लिए जमीन रखना चाहते थे, और सरकार महिलाओं द्वारा किए गए बहुत सारे अग्रिमों से भयभीत थी। अगर वह अपने देश और माताओं-महिलाओं को बचाने में मदद करना चाहती थी, तो वांगारी को अपना संदेश फैलाने के लिए दुनिया में जाना होगा। उसे एक बार फिर अपना घर छोड़ना होगा।

वांगारी ने पूरी दुनिया के शिक्षकों, राष्ट्रपतियों, किसानों, राजदूतों और स्कूली बच्चों को अपनी कहानी सुनाना शुरू किया। उसने गंदी मिट्टी में खुदाई की, पौधे रोपे, और महिलाओं के अधिकारों के बारे में बात की। हर किसी से मिलने के साथ, उसने बदलाव के बीज साझा किए।

समय के साथ-साथ केन्या बदल गया। अधिक लोगों ने वांगारी के संदेश को सुना, उसे "पेड़ों की मां" कहा। वे उसे केन्या के नए लोकतंत्र में ले जाना चाहते थे। वांगारी केन्या की संसद में चुनी गई और पर्यावरण मंत्री बनी। फिर भी, उसने पेड़ लगाना बंद नहीं किया।

2004 में वांगारी को दुनिया का सबसे प्रतिष्ठित शांति पुरस्कार - नोबेल शांति पुरस्कार मिला। यह पहले कभी किसी अफ्रीकी महिला या पर्यावरणविद को नहीं दिया गया था।

अपने गाँव से दूर दुनिया भर के लोगों के दर्शकों के सामने खड़े होकर, वांगारी ने मुगुमो के अपने बचपन के सबक को याद किया। वह समझाती है कि दृढ़ता, धैर्य, और प्रतिबद्धता के विचारों को, एक बीज के रूप में, प्रत्येक बच्चे के दिल में लगाया जाना चाहिए । यह बीज रूपी विचार छोटा जरूर लग सकता है लेकिन एक पेड़ के रूप में लंबा है जो आकाश तक पहुंचता है । "युवा लोग, आप हमारी आशा और हमारे भविष्य हैं," उसने कहा।

और फिर, जैसा कि उसने पहले भी कई बार किया था, वांगारी ने एक पेड़ लगाया।